

शिवालिक पहाड़ियों से ही हिण्डन के साथ-साथ हिण्डन की पश्चिमी दिशा से नागदेव नदी निकलती है। नागदेव नदी करीब 45 किलोमीटर की दूरी तय करने के पश्चात सहारनपुर में ही घोघेकी गांव के जंगल में आकर हिण्डन नदी में मिल जाती है। बरसात के दौरान इस नदी में अधिक मात्रा में पानी बहता है। यह नदी हिण्डन में पानी का मुख्य स्रोत है।



मोहननगर बैराज पर भी हिण्डन में गाजियाबाद के घरेलू बहिस्त्राव व उधोगों के नाले लगातार मिलते रहते हैं। बैराज से आगे बढ़ते हुए हिण्डन नदी गौतमबुद्धनगर जनपद में प्रवेश करती है तो वहां गाजियाबाद से भी विकराल समस्या हिण्डन को झेलनी पड़ती है। यहां पर उधोगों का तरल कचरा, घरेलू बहिस्त्राव व अतिक्रमण जैसी गंभीर समस्याएं हिण्डन की हत्या की साजिश में अंतिम किरदार निभाती हैं। जैसे-तैसे हिण्डन यमुना नदी के निकट तक पहुंचती है। यमुना में मिलने से दो किलोमीटर पहले अपर गंगा नहर से करीब 400 क्यूसेक पानी हिण्डन की पूर्वी दिशा की ओर से हिण्डन नदी में डाल दिया जाता है, लेकिन हिण्डन नदी पर जहरीली गंदगी का बोझ इतना अधिक होता है कि वह उसमें बहुत अधिक असर नहीं डाल पाता है।

नदी में पानी के स्रोत

हिण्डन नदी में पानी का मुख्य स्रोत वर्षाजल तथा नहर का पानी ही है। नदी उद्गम से बरसात के दौरान ही अधिक मात्रा में पानी हिंडन में आता है। उस दौरान करीब 100 मीटर चौड़े नदी तल में तीन से चार फीट पानी बहता है। कुछ पानी शिवालिक आरक्षित वन क्षेत्र में मौजूद घने जंगल में मौजूद पेड़ों की जड़ों से रिसते हुए नदी की तली पर आ जाता है। अपर गंगा नहर से हिण्डन की कुल दूरी तक चार स्थानों पर करीब 3000 क्यूसेक पानी हिण्डन नदी में सीधे व सहायक नदियों के माध्यम से डाला जाता है। हिण्डन की सहायक धारा बरसनी झरने से वर्षभर पानी गिरता रहता है। बरसनी झरना करीब 100 फीट ऊंचा है।

वर्ष 1978 में हिण्डन नदी में बाढ़ के दौरान अधिकतम पानी का बहाव करीब 1,30,000 क्यूसेक मापा गया था। इससे अधिक पानी का बहाव हिंडन नदी में आज तक नहीं देखा गया है।

बरसाती नदी

हिण्डन एक बरसाती नदी है। इसमें बरसात के दौरान (जुलाई से सितम्बर) पानी की मात्रा बढ़ जाती है जबकि अन्य दिनों (अक्तूबर से जून) में पानी न होने के कारण अनेक स्थानों पर हिंडन नदी सूख जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें शहरों, कस्बों का गैर-शोधित घरेलू बहिस्त्राव, उधोगों से निकलने वाला प्रदूषित पानी ही बहता है।

हिण्डन की सहायक नदियां

हिण्डन नदी की प्रमुख सहायक नदियां काली (पश्चिम), कृष्णी, पुर का टांडा की धारा, धमोला, पांवधोई, शीला, नागदेव व चाचाराव हैं जबकि सहायक धाराएं बरसनी, सपोलिया, छज्जेवाली, पीरवाली, कोठरी, अंधाकुन्डी व स्रोती हैं। ये सभी एक साथ मिलकर ही हिण्डन को नदी बनाती हैं। ये सभी एक निश्चित दूरी व स्थान पर हिण्डन नदी में आकर मिलती रहती हैं। जहां पर कोठरी धारा नदी के मुख्य भाग में मिलती है उसे कोठरी मिलान अथवा दुजाला (दो जलों का मिलन) के नाम से जानते हैं। शिवालिक पहाड़ियों से ही हिण्डन के साथ-साथ हिण्डन की पश्चिमी दिशा से नागदेव नदी निकलती है। नागदेव नदी करीब 45 किलोमीटर की दूरी तय करने के पश्चात सहारनपुर में ही घोघेकी गांव के जंगल में आकर हिण्डन नदी में मिल जाती है। बरसात के दौरान इस नदी में अधिक मात्रा में पानी बहता है। यह हिण्डन नदी में पानी का मुख्य स्रोत है।

हिण्डन की बड़ी सहायक नदियों में काली (पश्चिम) जोकि हिण्डन नदी की पूर्वी दिशा से सहारनपुर जनपद के ही गंगाली गांव से प्रारम्भ होकर मुजफ्फरनगर से होते हुए करीब 145 किलोमीटर का सफर तय करके मेरठ जनपद के गांव पिठलोकर के जंगल में जाकर हिण्डन नदी में समाहित होती है। काली (पश्चिम) में चुड़ियाला से प्रारम्भ होने वाली शीला नदी देवबंद के पास मतौली गांव के निकट आकर पहले ही समा चुकी होती है। हिण्डन में मिलने से पहले काली (पश्चिम) नदी में मुजफ्फरनगर शहर से करीब 25 किलोमीटर की दूरी पर अपर गंगा नहर खतौली से एक नाले के माध्यम से करीब 1000 क्यूसेक पानी अम्बरपुर गांव के जंगल में डाला जाता रहा है। वर्तमान में यह पानी तकनीकी समस्या के चलते नहीं डाला जा रहा है। इससे